क्रिया

परिभाषा-

(1)डॉ. वासुदेवनंदन प्रसाद-जिस शब्द से काम का करना या होना समज़ा जाय उसे क्रिया कहते हैं।

(2)कामताप्रसाद गुरु- किसी वस्तु के विषय में विधान करनेवाले शब्द को क्रिया कहते हैं।

(3)डॉ.उमेशचन्द्र शुक्ल- उस विकारी शब्द को जो किसी कार्य का करना या होना प्रकट करे, क्रिया कहते हैं।

प्रकार-

प्रयोग की दृष्टि से-(1)अकर्मक क्रिया (2) सकर्मक (3) द्विकर्मक

(1)अकर्मक क्रिया- जिन क्रियाओं का व्यापार और फल कर्ता पर हो,उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं।

जैसे-श्याम लिखता है।

सीता चलती है।

मोहन दौड़ता है।

सकर्मक क्रिया-जब क्रिया के व्यापार का फल कर्म पर पडता है तब उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं।

जैसे- रमेश रोटी खाता है।

मंगल बोझ उठाता है।

द्विकर्मक- जिस सकर्मक क्रिया का अर्थ स्पष्ट करने के लिए वाक्य में दो कर्म प्रयुक्त होते हैं,उसे द्विकर्मक क्रिया कहते हैं।जैसे-मां अपनी बेटी को कहानी सुनाती है।

व्युत्पत्ति के आधार पर-

(1) मूल क्रिया(रूढ़ क्रिया) (2) यौगिक क्रिया

(1)मूल क्रिया (रूढ़ क्रिया) -मूल धातु से बनी हुई क्रिया को मूल रूढ़) क्रिया कहते हैं।

जैसे-चल् धातु से चलना,चलेगा,चलेगी,चली आदि रूढ़ क्रियाएँ हैं।

(2)यौगिक क्रिया- जो क्रिया धातु के साथ दूसरे शब्द लगाकर बनाई जाती है अथवा एक से अधिक तत्वों से होती है, उसे यौगिक क्रिया कहते हैं।

जैसे- चल् से चलाना,चलवाना, चलचलाचल,चल सकना,

यौगिक क्रिया के दो उपभेद है-

(अ)प्रेरणार्थक क्रिया(ब)संयुक्त क्रिया

(अ)प्रेरणार्थक क्रिया-कर्ता स्वयं कार्य न कर किसी दूसरे को कार
करने के लिए प्रेरित करे,उसे प्रेरणार्थक क्रिया
कहते हैं।

जैसे-शिक्षक विद्यार्थी से किताब पढ़वाता है।

बहुधा धातुओं से दो-दो प्रेरणार्थक क्रियाएँ बनती हैं,पहली प्रेरणार्थक क्रिया में आ और दूसरी में आना जुड़ जाता है।

गिर(ना)	गिराना	गिरवाना
चल(ना)	चलाना	चलवाना
चढ़(ना)	चढ़ाना	चढ़वाना

(ब)संयुक्त क्रिया-जो क्रिया किसी दूसरी क्रिया या अन्य शब्द-भे
के योग से बनती है, उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं।

जैसे-तुम मेरे घर प्रतिदिन **आया करो**।

अब रोगी चल सकता है।

संयुक्त क्रिया के दूसरे उपभेद-

*सहायक क्रिया-दो क्रिया के योग में जो क्रिया मुख्य क्रिया से रूप को पूरा करने में सहायता प्रदान करती है, उसे सहायक क्रिया कहते हैं।जैसे-

मैंने पढ़ा था। जिसमें पढ़ तथा था समय सूचित क्रिया।

अर्थ की दृष्टि से सहायक क्रिया उपभेद-

1.आरंभबोधक-श्याम खेलने लगा।
2.समाप्तिबोधक-श्याम खा चुका।
3.अवकाशबोधक-श्याम मुश्किल से सोने पाया।
4.अनुमतिबोधक-श्याम को खेलने दो।
5.नित्यताबोधक-श्याम खेलता रहा।
6.इच्छाबोधक-श्याम खेलना चाहता।
7.आवश्यकताबोधक-श्याम को घर जाना होगा।

**पूर्वकालिक क्रिया-जब एक क्रिया समाप्त कर तुरंत दूसरी क्रिया शुरू हो तब पहली क्रिया पूर्वकालिक क्रिया कहलाती है। जैसे-श्याम ने खेलकर स्नान किया।

जैसे-श्याम ने खेलकर स्नान किया।

(क)नामबोधक क्रिया-संज्ञा अथवा विशेषण के साथ क्रिया जोड़ने से जो संयुक्त क्रिया बनती है,उसे नाम बोधक क्रिया कहते हैं।

जैसे-संज्ञा तथा क्रिया- -अखियाँ मिलाना।

विशेषण तथा क्रिया -खुश करना।

(ड)क्रियार्थक क्रिया-जब संज्ञा क्रिया के अर्थ में प्रयोग हो तब वह संज्ञा क्रियार्थक क्रिया बनती है।

जैसे-टहलना स्वास्थ के लिए अच्छा है।